करलो माँ लक्ष्मी की आरती

जिस भूमि क भव–वैभव से इंद्र देव तक चलते थे।
अग्रसेन के भीषण तप से देव सिंहासन हिलते थे।
ऊंच–नीच का भेद हटाकर समता का संचार किया,
एक रूपया–एक ईंट हर आगंतुक को मिलते थे।
अग्रसेन सा सुत पाकर थी धन्य हुई माँ भारती।

शिव की तपस्या भीषण तब शंभू साकार हुए।
उनके निर्देशों से राजा फिर तप को तैयार हुए।
महालक्ष्मी ने खुश होकर धन धान्यों की वर्षा की।
नागवंश से संधि हुई और घर–घर में मंगलाचार हुए।
अग्रवंश के महालक्ष्मी तब से भाग्य संवारती।

कुल की देवी का मन्दिर भक्तो को भव्य बनाना है।
बीत गये सुन्दर अतीत को पुनः धरा पर लाना है।
उठा अग्रसंतानों अपनी कुल भूमि अग्रोहा को।
शक्ति सरोवर की जलधारा तुमको आज पुकारती है।

वर्षों पहले थी ना पर आज हुई क्या मजबूरी।
कुलभूमि निर्धन, हम धनपति, हाय ये कैसी मगरूरी।
जिसकी ममता से अनुप्रणित रोम रोम अपना भाई।
चलो मिटा दें अग्रोहा में जाकर ये दूरी।
पुत्र तुम्हारी माता रह–रह के बाट निहारती।

– सत्यनारायण मौर्य